प्रातः क्लास 28-8-68 ओमशान्ति मधुबन शिव बाबा याद है?

ओमशान्तिः रूहानी बाप के रूहानी बच्चे यह तो हरेक जानते हैं कि बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। बाबा जानते हैं कि यह जानते हुये भी फिर घड़ी2 भूल जाते हैं। यहां जो बैठे हैं यह तो जानते हैं ना परन्तु फिर भी भूल जाते हैं। दुनिया वाले तो बिल्कुल यह जानते ही नहीं। बाप कहते हैं सिर्फ यह तीन अक्षर भी याद रहे तो बहुत सर्विस कर सकते हैं। प्रदर्शनी अथवा म्युज़ियम में तुम्हारे पास बहुत आते हैं, घर में भी मित्र सम्बन्धि आद बहुत आते हैं कोई भी आवे तो उनको समझाना चाहिए जिसको भगवान कहा जाता है वह बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह याद हो तो भी ठीक। और कोई की याद न आये। और तो कोई को ऐसे कह भी नहीं सकते। तुम बच्चे ही जानते हो हमारा बाबा बाप भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। कितना सहज है। परन्तु कोई2 की ऐसी पत्थरबुधि है जो यह तीन अक्षर भी बुधि में धारण नहीं हो सकती। भूल जाते हैं। बाबा हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं, बाबा आते ही हैं मनुष्य से देवता बनाने। क्योंकि बेहद का बाप है ना। तो जरूर बेहद का वरसा ही देंगे। बेहद का वरसा है देवताओं पास। इतना सिर्फ याद करे तो घर में भी बहुत सर्विस कर सकते हैं। परन्तु यह भूल जाने कारण किसको बता नहीं सकते। घड़ी2 भूल जाते हैं कल्प के भूले हुये हैं ना। अभी बाप देह समझाते हैं। वास्तव में इस ज्ञान को बहुत सहज कहा जाता है। बाकी याद की यात्रा से सम्पूर्ण बनना इसमें मेहनत है। बाबा हमारा बाप भी है, शिक्षा भी देते हैं, वरसा भी देते हैं। पवित्र भी बनाते हैं। पतित-पावन बाप है। सिर्फ कहते हैं सभी को यही कहो कि मुझे याद करो। जब कि मैं पतित पावन हूं तो जरूर मैं सभी को पतित से पावन बनाऊंगा। बैठ थोड़ेई जाऊंगा। बूढ़ा तन है। यह जावेंगे तो वह भी चला जावेगा। इनके सिवाय और फिर कहां भटकता रहेगा। फिर कायदे अनुसार ज्ञान चल न सके। उनको तो ब्रह्मा द्वारा ही देना है। बहुत बच्चे हैं जो समझते हैं मम्मा भी चली गई तो बाबा को जाने में कोई देरी थोड़ेई है। अरे यह चला जावे तो फिर बाबा सावधानी कैसे देंगे। तुम किसके पास आवेंगे? बाबा किस में आवेंगे? क्या दीदी में आवेंगे या और कोई है जिस में आवेंगे। उनके लिये तो एक ही ब्रह्मा है जिनके तन में आते हैं। यह चला जाये तो किसके पास आवेंगे। ऐसी2 ख्यालात भी न करनी चाहिए। ऐसे बहुतों को आते हैं। अरे फिर बाप कैसे पढ़ावेंगे। ड्रामा को भी समझना है। ऐसी ख्यालात रखनी ही नहीं चाहिए। समझने की बात है ना। बाप ही आकर ब्रह्मा के तन में समझाते हैं। बाकी तो सभी भाई-बहनें हैं। इतना सहज है तो भी कोई पत्थर बुधि ऐसे हैं तो कुछ समझते नहीं हैं। बिल्कुल ही वर्थ नाट पेनी है। कोई काम के नहीं। देखने लायक भी नहीं। शिव बाबा ऐसे बच्चों को भी देखकर क्या करेंगे। आगे चलकर तुम्हारी भी उन में आंख न डूबेगी। दासी का मुंह क्या देखेंगे। निश्चय हो जावेगा कौन2 क्या बनेंगे। बाबा तो सभी बता देते हैं। बाबा की सर्विस में जरा भी कदम नहीं उठाते तो वह पदम फिर क्या पावेंगे। पदमपति तो सर्विस से ही बन सकते हैं। सर्विस ही कदम पर पदम ले आती है। सर्विस के लिए देखो बच्चे कहां2 से भागते रहते हैं। कितने कदम उठाते जाते हैं। पदम तो उन्हों को मिलेगा। यह भी बुधि कहती है ब्रह्माकुमारियों द्वारा बनेंगे। शूद्र को ब्राह्मण बनाना पड़े। ब्राह्मण ही न बनाया तो क्या बनेंगे। सर्विस तो चाहिए ना। बच्चों को सर्विस का समाचार भी इसलिए सुनाया जाता है कि टेम्पटेशन हो। सर्विस से ही पदम मिलती है। सिर्फ एक बात ही सुनाओ जो दुनिया में और कोई नहीं जानते। बेहद का बाप बेहद का बाप भी है। परन्तु बाप को कोई को पता ही नहीं है। सिर्फ ऐसे ही गाड फादर कहते रहते हैं। वह टीचर भी यह तो कोई की भी बुधि में नहीं होगा। स्टुडन्ट की बुधि में हमेशा टीचर ही याद रहती है। तो पुरी खेती नही पढ़ते है तो उनको अनपढ कहा जाता है। बाबा कहते है किर्हजा नहीहै तुम कुछ भी नही पढो हो तो समझ तो सकते हो नां कि हम भाई-2 है। हमारा बाप बेहद का बाप है। बाप आते ही है एक धर्म की स्थापना करने। ब्रह्मा द्वारा आ, स, दे, दे, धर्म की स्थापना करते है। परन्तु अन्धे लोग तो कुछ भी समझते नही है। ईश्वर अगर कभी नही आया होता तो उनक बुलाते ही क्योकि हे लिबरेटर आओ।। पतित पावन आओ। जबकि पतित पावन को याद

करते है फिर शास्त्र क्यो पढ़ते है। तीर्थों पर क्यो जाते है? वहां पर बैठा है क्या? कोई जानता ही नही है तो प्रश्न कैसे पूछे? जबकि पतित पावन ईश्वर है तो फिर गंगा स्नान आद से कोई भी पावन हो कैसे सकता है? पुर्नजन्म जो जरूर यहीं पर ही लेना है। पुरानी दुनियां और नई दुनियां मे फर्क तो है नां। इसको सतयुग नही कहेगे। कलयुग मे फिर स्वर्ग कहां से आया? मनुष्यो की तो बिलकुल ही पत्थर बुधी है। जहां पर भी थोडा सा सुख देखते है तो स्वर्ग समझ लेते है बिलकुल ही जैस कि जट है। यहां बाप समझाते है कि बाप को कोई को गाली नही देते है। बाप शिक्षा भी देते है। सभी की सदगति भी करते है। भगवान बाप है तो जरूर बाप से कुछ मिलना चाहिय नां। बाबा अक्षर ही ऐसा है जो कि उसेस वर्से की खुशबु जरूर आती ही है। और भल कितने भी काका-मामा-चाचा आद हो परन्तु उनेस वर्से की खुशबु नही आती है। अन्तरमुख हो समझना है। बाप ठीक कहते है नां। गुरु पास तो कोई भी जयदाद होती नही है। वो तो खुद ही घर बार छोड कर जंगल मे चले जाते है। बाकी उनके पास क्या रेहगा। कुछ भी नही। तुम ऐसे नही कहते हो कि हम घर-बार छोडते है। तुमने सन्यास तो विकारो का किया है। वो तो कह देते है कि हमेन घर-बार छोडा। तुम कहते हो हम तो सारी पुरानी दुनियां विकारो का सन्यास करते है। नई दुनियां मे जाने के लिय कितना सहज है। हम सन्यास करते है सारी पुरानी दुनियां तमोप्रधान सिष्टी का। सतयुग तो है नई दुनियां। यह भी जानते हो कि नईदुनियां थी जरूर। सभी गाते है स्वर्ग कहा ही जाता है नई दुनियां को। परन्तु वो लोग तो सिर्फ कहने मात्र कह देते है समझ तो कुछ भी नही है। बाप बच्चो को कहते है सिर्फ यह विचार करो बाबा हमारा बाप भी है शिक्षक भी है तो सतगुरु भी है। सभी को ले जावेगे। अक्षर ही है मनमनाभव। इसमे ही सभीआ जाता है। परन्तु यह भी भूल जाते है। पता नही बुधी मे क्या-2 याद पड़ता रहता है। नही तो रोज लिख कर दो कि इतना समय हम किस अवस्था मे बैठे हो बाप टीचर गुरु के सामने तोवो ही याद आना चाहिय नां। स्टुडण्टस को टीचर ही याद आवेगा। परन्तु यहां तो माया है नां। एकदम माथ ही मूंड लेती है। पद जो मिलना है उसका तो नुकसान ही कर देती है आयु है डबल सिरताज धारी बनने परन्तु माया तो माथा ही मूंढ लेती है। सारा राज-भाग ही ले लेती है। तुम को पता ही नही पढना है हम आये थे वर्सा लेनेपरन्तु मिला तो कुछ भी नही। ऐसे तो कहेगे नां भल स्वर्ग मे जावेगे परन्तु वो तो कोई बडी बात थोडे ही है। यहां आये फिर भल पढ़े नही परन्तु स्वर्ग मे जो जावेगे नां। यहांपर तो बैठे है नां। समझते है कि स्वर्ग मे ही जाना है फिर भल क्या भी बने। वो तो पढाई नही हुई नां। थोडा भी सुना तो उसका फल तो मिल ही जाता है। पढाई से तो बडी स्कालरशिप मिलती है। बाप से ऊंच ते ऊंच पद पाना है। तो पुरुषार्थ करना पडे। पढाई याद होगी तो 84 का चक्र भी याद आ जावेगा यहां भल बैठे है सभी यद आना चाहिये। परन्तु यह भी आता नही है। अगर याद आवे तो किसीको सुनावे भी। चित्र तो सभी के पास है। शिव के चित्र पर तो तुम कोई को भी सुनावेगे तो कव भी गुस्सा नही करेगे बोलो आओ तो हम आपको बतावे कि यह शिव तो बेहद का बाप है नही तो कौन है? इसके साथ क्या सम्बन्ध है? यूं ही फालतु चित्र तो नही लगा होगा नां। शिव के लिय तो जरूर कहेगे कि यह भगवान है। भगवान तो निराकार ही होता है। उनको बाप कहाजाता है। वो शिक्षा भी देते है। हमारी आत्मा शिक्षा लेती है नां। आत्मा ही सब कुछ करती है। टीचर भी आत्मा ही बनती है। बाप भी यह रथ लेकर पढ़ाते है इस तयुग की स्थापना करते है। कलयुग का नाम निशान ही नही तो कलयुगी मनुष्य आवेगे ही कहां से। सर्विसबुल बच्चो की तो सारा दिन खयालाते चलती रहती है। सर्विस नही करते है तो बुधी भी चलती ही नही है जैस कि बुधू बैठे है। बाप को समझ नही सकते है। पतित पावन बाप को याद करने से ही वर्सा मिलेगा। याद करते-2 मरेगे तो बाप की मिलकियत सारी मिलेगी। बेहद के बाप कीमिलकियत तो है स्वर्ग। बेज भी बच्चो के पास है। और मे मित्र आद तो बहुत ही आते है। कोई मरता है तो भी आते है। उनको भी तुम बच्चे सर्विस कर सकते हो शिव बाबा का चित्र तो बहुतही अच्छा है। भल बडा ही रखो। इस पर कोईभी कुछ कहेगा नही। ऐसा नही कहेगे कि यह ब्र, कु, कु, कौन है। यह तो है गुप्त। तुम भी गुप्त मे ही समझा सकते हो। सिर्फ शिव का ही

का चित्र रखो। और सभी चित्र छिपा दो। यह शिव बाबा ही बाप टीचर गुरु है। यह आते ही है नई दुनियां की स्थापना करने। सगमं पर ही आते है। यह ज्ञान तो बुधी मे है ही नां। बोलो शिव बाबा को याद करो और कोई को याद नही करो। शिव बाबा ही पतित पावन है। वो कहते है कि मैरे को ही याद करो तो तुम मैरे साथ ही आकर मिलोगे। तुम गुप्त सर्विस कर सकते हो। यह ल-न भी तो इसी नालेज से यह बने है। कहेगे शिव बाबा तो हैनिराकार फिर कैस आते है? अरेः- तुम्हारी तो आत्मा भी निराकार है। वो कैसे आती है। वो भी तो ऊपर से ही आती है नां पार्ट बजाने यह भी बाप हीआकर समझाते है। बैल पर तो आ नही सकता। बोलगा कैसे? सधारन बूढ़े तन मे आते है। फिर आपे ही खुद पूछते-2 मूंझ पढ़ेगे बात करने की बहुत युक्तियां चाहिये। कोई कहे कि तुम भक्ति नही करते हो? बोलो हम तो सभी कुछ करते है। युक्ति से चलना होता है नां किसीको उठाने लिये ही सोचना चाहिये कि क्या युक्ति रचे। कोईको नाराज भी नही करना है। गृहस्थ मे रहते सिर्फ पवित्र रहना है। तुम कहते हो कि बाव सर्विस नही मिलती है। अरेः- सर्विस तो तुम बहुत कर सकते हो। गगां जी पर जाकर बैठ जाओ। बोलोयह पानी का स्नान करने से क्या होगा। क्या पावन बन जावेगे? तुम तो भगवान को कहते हो कि हे पतित पावन आओ। आकर पा न बनाओ। फिर वो पतित पावनहै यां यह है? ऐसी बड़ी नदियां तो ढेर है। बाप तो पतित पावन एक है नां। यह पानी की नदियां तो सदैव है ही। बाप को तो पावन बनाने लिय ही आना पड़ता है। आते ही हैपुरुषोत्म संगम युग पर। आकर पावन बनाते है। वहां पर तो कोईभी पतित होता ही नही है। नाम ही है स्वर्ग। नईदुनियां और पुरानी दुनियां। इस संगम का भी तुमको पता है। बाप तो अनेक प्रकार से सर्विस की युक्तियां समझाते रहते है। बुधु भी नही बनो। अमरनाथ पर भी कहते है कि पैरटस होते है परन्तु है तो कबूतर। पैरटस पढ़ते है वो तो पैगाम पहुचाते है। ऐसे तो नही कि परमात्मा का पैगाम ऊपर से कबूतर ले आवेगा। नेहरु को भी शोक था। यह भी सिखाते है। उनके पपर्व मे लिख कर बांध दो तो ले जावेगा। उनको रोज दाना मिलता है। तो और कहीं भी भटकने की दरकार नही। तुमको भी यहां पर दाना मिलता है। तुम्हारी बुधी मे है विश्व की बादशाही तो यही मिलनी है। वो भी समझते है कि दाना यहां पर मिलता है तोफिर हिर जाते है। तुम तो चेतन हो। तुमको तो अविनाशी ज्ञान रत्नो का दान मिलता है। शास्त्रो मे भी है कि चिडियायें सागर को सुखा देती थी। .... बहुत कथायें लिख दी है। मनु मनुष्य तो कहेगे सत्य। फिर कहते है कि सागर से देवता निकले। रत्नो की थालियां ले आये। कहेगे सत्य। अब समुन्द्र मे से देवता भी कैसे निकेलगे? समुन्द्र मनुष्य वां देवता रहते है क्या? कुछ भी समझते नही है। जन्मजः झूठ ही पढ़ते सुनते रहते है। इसलिय ही कहते है झूठी माया... सच्चे और झूठे संसार मे कितना रात-दिन का फर्क है। झूठ बोलते-2 इनसाल्वेन्ट बन पड़े हो। कितनी ग्लानी करते आये हो। ईश्वरसर्वव्यापी है। यह झूठ भी है तो ग्लानी भी है। तुम कितनी युक्ति से समझाते हो फिर भी कोटो मे से कोऊ को ही बुधी मे बैठता है। है तो बहुत ही सहज ज्ञान योग। बाप टीचर गुरु को याद करने पर अपना वर्सा भी याद आ जावेगा। फिर अपनी जाचं करनी है कि हम सच्च-2बाबा को याद करते थे वां और तरफ बुधी जाती थी। तुम्हारी बुधी को अभी समझ मिली है। कितनी मीठी-2 बाते बाप समझाते है। युक्तियां बताते है। तुम कोई को भी बैठ समझावेगे फिर तुम्हारे दुश्मन भी नही बनेगे। शिव बाबा ही तो तुम्हारा बाप टीचर गुरु है। उनको ही याद करो। परन्तु यह रथ देखकर कितनी गालियां देते है। समझाने की युक्तियां रचनी चाहिये। ब्रहमा के चित्र पर तो बहुत चिड़ते है तो अच्छा नही रखो। आपही इस बात पर आ जावेगे। शिव बाबा चित्र रखने से कब भी उडावेगे नही। अरेः- यह तो आत्माओं का बाप है नां। तो इससे बहुतो का फायदा हो सकता है। एक बाप के सिवा और कोई की याद नही आवे। और संग टोड़ .. यह है किसी के कल्याण की युक्तियां। बाप को याद ही नही करेगे तो पावन कैसे बनेगे। घरमे हो बहुत सर्विस कर सकते हो। बहुत मित्र सम्बन्धी आद तुमको मिलेगे। भिन्न-2 युक्तियां रचो। बहुतो का कल्याण करो। हटी तो एक ही है जावेगे भी कहां? अच्छा बापदादा का याद प्यार गुडमोर्निंगनमस्ते